Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

हिन्दी २६

२७

ज विकासमाला

संत नामदेव

ाहित्य मण्डल प्रकाशन

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समाज-विकास-माला : १११

संत नामदेव

महाराष्ट्र के महान संत का परिचय

हि. २६५

लेखक
श्रीपाद जोशी

४३५७

संपादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९६०
मूल्य
[illegible] सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

Lal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पाठकों से

इस माला में आप कई संतों का परिचय पढ़ चुके हैं और उनकी कल्याणकारी वाणी का रस ले चुके हैं। इस पुस्तक में हम महाराष्ट्र के महान संत नामदेव का थोड़ा-सा परिचय और उनके चुने हुए पद दे रहे हैं।

संतों के जीवन में प्रायः ऐसी घटनाएं मिलती हैं, जिनपर कभी-कभी विश्वास नहीं होता; लेकिन विश्वास हो या न हो, वे घटनाएं बड़ी शिक्षा देती हैं। संत नामदेव के जीवन में भी अनेक चमत्कार हुए, उनका हाल पढ़कर आज भी बड़ी प्रेरणा मिलती है।

आप इस पुस्तक को पढ़ें और इससे लाभ उठायें।

—सम्पादक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

संत नामदेव

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

संत नामदेव

: १ :

नामदेव की विशेषता

वैसे तो महाराष्ट्र में कई सन्त हुए, पर उनमें पांच सन्तों के नाम खासतौर पर लिये जाते हैं—ज्ञानदेव (ज्ञानेश्वर), नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास। इनमें भी नामदेव की बात कुछ और है। बाकी चार सन्तों की वाणी ज्यादातर मराठी भाषा में ही पाई जाती है, हालांकि उन्होंने हिन्दी भाषा में भी थोड़ी-बहुत कविता की है, जिसे वे हिन्दुस्तानी कहते थे। नामदेव ने मराठी में तो कविता की ही है, पर साथ ही उनकी 'मुखबानी' हिन्दी में भी काफी संख्या में मौजूद है। इतना ही नहीं, सिक्खों के 'गुरुग्रंथसाहब' में नामदेव के ६१ पद शामिल हैं, जो 'भक्त नामदेव की मुखबानी' के नाम से मशहूर हैं। इस तरह महाराष्ट्र के इस संत-भक्त ने उत्तर भारत के सन्तों में भी अपना एक खास स्थान बना लिया है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आइये, हम इस महात्मा की जीवनी का थोड़े में परिचय प्राप्त करें।

: २ :

जन्म और बचपन

नामदेव के पिता का नाम दामाशेटी शिंपी (दर्जी) था और माता का नाम गोणाई। दामा शेटी का असली वतन मराठवाड़ा के परभणी जिले का नरसी-बामणी गांव था। मगर नामदेव के जन्म से कुछ साल पहले वह पंढरपुर आकर बस गये थे। इसी पंढरपुर में शक संवत् ११९२ (सन् १२७० ईसवी) के कार्तिक सुदी ११ के दिन नामदेव का जन्म हुआ था। दामाजी शेटी बड़े विट्ठल-भक्त थे। वह अपने साथ बालक नामदेव को भी भगवान् का दर्शन कराने ले जाते थे। इससे नामदेव के अन्दर की ईश्वर-भक्ति अच्छी तरह फलने-फूलने लगी।

नामदेव के बचपन की एक कहानी बड़ी रोचक है। एक बार दामाजी शेटी को किसी काम से दूसरे गांव जाना पड़ा। इसलिए जाते समय उन्होंने नामदेव से कहा, "बेटा, आज के दिन तुम मन्दिर में जाकर भगवान् को भोग चढ़ा आना।"

नामदेव ने खुशी से यह बात स्वीकार कर ली। ठीक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समय पर वह नैवेद्य लेकर मन्दिर में पहुंचा और उसे भगवान् के सामने रखकर इसकी प्रतीक्षा करने लगा कि भगवान् कब नैवेद्य खाते हैं। मगर काफी समय निकल जाने पर भी देव-भोग वैसा-का-वैसा ही रहा। नामदेव को लगा, भगवान् उससे नाराज हो गये है, इसीलिए भोग नहीं लगा रहे हैं। वह भोलेपन से बोला, "ऐ भगवान्, क्या मुझसे नाराज हो गये हो? तुम हर रोज भोग लगाते हो, फिर आज ही क्यों हिचकिचाते हो? जबतक तुम यह नैवेद्य नहीं खाओगे तबतक मैं यहीं खड़ा रहूंगा। न खाना खाऊंगा, न पानी पीऊंगा।"

यह कहकर वह बड़ी देर तक वहीं खड़ा रहा। उसके पांव दर्द करने लगे। आंखें मुंदने लगीं। फिर भी वह टस-से-मस न हुआ।

उसकी यह भक्ति देखकर भगवान् विट्ठल का दिल पसीजा और उन्होंने अपने हाथों नामदेव का लाया हुआ नैवेद्य बड़े प्रेम से खाया। बालक नामदेव खुशी से फूला न समाया। उसने भगवान् को नमस्कार किया और खाली थाली लेकर वह घर लौटा।

इधर बहुत देर हो जाने से उसकी मां गोणाई को चिन्ता हो रही थी। वह बार-बार दरवाजे पर आकर नामदेव की राह देख रही थी। जब उसने नामदेव

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को खाली थाली लेकर आते देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "बेटा, तुमने इतनी देर क्यों लगाई ? और यह थाली खाली कैसे होगई ?"

बालक ने सारा हाल कह-सुनाया। सुनकर माता को बड़ा आश्चर्य हुआ, पर उसे विश्वास नहीं हुआ; उसने सोचा कि यह बहाना बना रहा है। बोली, "बेटा, सच्ची बात बताओ, मैं तुम्हें सजा नहीं दूंगी।" मगर नामदेव ने फिर वही बात कह दी।

रात को जब दामाजी शेटी घर लौटे तो गोणाई ने उन्हें सारी घटना कह सुनाई, उन्हें भी बड़ा अचरज हुआ।

दूसरे दिन उन्होंने सोचा कि नामदेव की बात की सचाई की जांच की जाय। इसलिए वह अपने बेटे के साथ मन्दिर में गये और बाहर ही खड़े रहे।

थोड़ी देर बाद वह खिड़की में से झांकने लगे तो वहां का दृश्य देखकर वह हैरान रह गये। भगवान् विट्ठल सचमुच नैवेद्य खा रहे थे।

तब वह समझ गये कि उनका बेटा कोई मामूली लड़का नहीं है, वह विट्ठल का प्यारा है।

नामदेवजी का हृदय बड़ा ही कोमल था। सभी प्राणियों के बारे में उनके मन में दयाभाव था। एक दिन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वह खाना खाने की तैयारी में थे। इतने में एक कुत्ता वहां आया और उनकी थाली से रोटी लेकर भागने लगा। वह रोटी सूखी थी। नामदेव को लगा कि बेचारे कुत्ते को उससे तकलीफ होगी, इसलिए वह घी का कटोरा

घी का कटोरा लेकर नामदेव कुत्ते के पीछे दौड़े।

लेकर उसके पीछे दौड़ने लगे। कुत्ता डर के मारे जोर से भागने लगा। आखिर नामदेव ने उसे पकड़ ही लिया और उसके मुंह की रोटी पर घी चुपड़कर उसे बहुत प्रेम से खिलाई।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

: ३ :

गृहस्थ-जीवन

नामदेव के बारे में कुछ लोगों ने लिखा है कि वह बुरे लोगों की संगत से डाकू बन गये थे। बाद में सन्त बने। मगर इसके लिए कोई सबूत नहीं है।

नामदेव का विवाह बहुत छोटी यानी ११ बरस की, उम्र में ही हुआ था। उनकी पत्नी का नाम था राजाई। नारायण, महादेव, गोविन्द और विठोबा नाम के उनके चार बेटे थे और बेटी का नाम था निंबाई। ये सभी भगवान् के भक्त थे और उन्होंने भगवान् के गुण गानेवाले अभंग (पद) लिखे थे। इनके घर पर जनाबाई नाम की एक नौकरानी थी, महाराष्ट्र के सन्तों में उसका ऊंचा स्थान है। जनाबाई के अभंग आज भी महाराष्ट्र के देहातों में गाये जाते हैं।

नामदेव गृहस्थ तो बन गये; मगर घर-गृहस्थी की तरफ उनका कोई ध्यान नहीं था। वह भगवान् विट्ठल के भजन-पूजन-कीर्तन में ही आठों पहर मग्न रहते थे। उनकी भक्ति से भगवान् उनसे हमेशा प्रसन्न रहते थे और उनकी गृहस्थी का बोझ खुद ढोते थे।

एक बार नामदेव के साले उनके घर आये। घर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

में अनाज का एक दाना भी न था। पत्नी ने कहा, "आज मेरा भाई आया है। उसे तो कम-से-कम अच्छी तरह खिलाना चाहिए, वरना वह घर जाकर हमारी बदनामी करेगा।" पर नामदेव ने इसकी कोई परवाह न की। वह बोले, "आज तो एकादशी है। कल भोजन की बात सोची जायगी।" और वह मन्दिर चले गये। बेचारी राजाई सिर पीटकर रह गई।

इतने में एक आदमी कई गोनियों में दाल, चावल, गेहूं वगैरह भरकर नामदेव के घर आया और बोला, "आपके घरवाले ने यह सारा सामान भिजवाया है।"

राजाई ने खुशी-खुशी सारा सामान लिया और अच्छा खाना बनाकर अपने भाई को भरपेट खिलाया। जब नामदेव घर लौटे तो वह सब अनाज देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और वह समझ गये कि उनकी लाज रखने के लिए स्वयं भगवान् ने यह तकलीफ उठाई थी। उन्हें इसका बड़ा अफसोस हुआ और उन्होंने शहर के सारे गरीबों को जमा करके उन्हें वह अनाज बांट दिया।

नामदेव के लिए सोना और पत्थर समान थे। भूखों मरने की नौबत हमेशा आती रहती, फिर भी कभी उन्होंने पैसा जमा नहीं किया। अगर किसी तरह

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पैसा घर आ जाता था तो वह उसे लुटा देते थे।

पंढरपुर में भागवत नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह माता रुक्मिणी का भक्त था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर रुक्मिणी ने उसे एक पारस दिया था, जिसके छूने से लोहे का सोना बन जाता था। भागवत की पत्नी कमलजा और नामदेव की पत्नी राजाई में अच्छी दोस्ती थी। नामदेव की गरीबी का हाल कमलजा को मालूम था और उससे उसे बड़ा दुःख होता था। एक दिन बातों-ही-बातों में कमलजा ने राजाई से कहा, "हम लोग इस पारस की बदौलत ही सुख-चैन से रहते हैं। आप लोग भी उससे क्यों न लाभ उठायें! मैं आज तुम्हें अपना पारस देती हूं। उससे तुम चाहे जितना सोना बनालो और फिर मुझे लौटा दो। मगर याद रहे, ऐसा पारस कहीं नहीं मिलता। इसलिए वह कहीं खो न जाय।"

राजाई खुशी-खुशी उसे घर ले गई और घर के बहुत-से लोहे को उससे छुआकर उसने काफी सोना बना लिया। उसमें से थोड़ा सोना लेकर वह बाजार गई और काफी अनाज तथा दूसरी चीजें ले आई।

नामदेव ने घर लौटने पर राजाई की दौड़-धूप और अनाज के बोरे देखे तो उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उन्होंने राजाई से पूछताछ शुरू की। पहले तो वह टालमटोल करती रही, मगर जब नामदेव सबकुछ जान लेने पर अड़ गये तो उसे सारा हाल सुनाना पड़ा। नामदेव ने तुरन्त गरीबों को जमा किया और घर का सारा अनाज और सोना उन्हें दे दिया। बेचारी राजाई देखती रह गई !

बात यहींपर खत्म नहीं हुई। राजाई से पारस लेकर वह चन्द्रभागा नहाने चले गये। राजाई उनके पीछे-पीछे दौड़ी। वहां जाकर वह देखती क्या है कि नामदेव ने पारस चन्द्रभागा में फेंक दिया और उसके छूने से अपना शरीर गन्दा होगया हो, इस भाव से वह अच्छी तरह नहा लिये और भगवान् का भजन करने लगे।

यह सब देखकर बेचारी राजाई हक्का-बक्का रह गई और जोर-जोर से रोने लगी कि दूसरे के घर से लाया हुआ पत्थर मेरे पति ने नदी में फेंक दिया।

जब भागवत और उसकी पत्नी को पता चला तो वे भी रोते-चिल्लाते वहां पहुंच गये और नामदेव को बुरा-भला कहने लगे।

जब वे बहुत ही गिड़गिड़ाने लगे तो नामदेव नदी में कूद पड़े और हाथों में बहुत-से पत्थर लेकर ऊपर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आये। बोले, "अपना पारस ले लो !"

उन लोगों को लगा कि नामदेव मजाक कर रहे

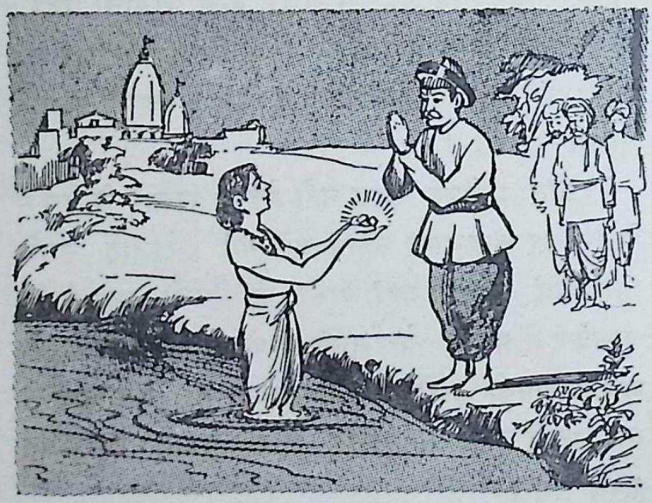

"अपना पारस ले लो।"

हैं। मगर जब उन्होंने सचमुच लोहे के टुकड़े उन पत्थरों से लगाकर देखे तो उन सबका सोना बन गया।

यह देखकर भागवत की आंखें खुल गईं। उसने नामदेव महाराज के पांव पकड़े और बोला, "महाराज, मैं मूरख आपकी कीमत नहीं समझ सका। जिसके छूने से मामूली पत्थर पारस बन जाते हैं, उसके लिए इस संसार में कौन-सी बात असंभव है ? आपको यह सामर्थ्य

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जिस भगवान् की भक्ति के कारण मिली है उसी भगवान् की शरण मैं जाना चाहता हूं। आप मुझे अपना शिष्य बनाइये।"

नामदेव ने अपने हाथ के सारे पत्थर चन्द्रभागा में फेंक दिये और वहां इकट्ठे हुए लोगों को भगवान् की भक्ति करने का उपदेश दिया।

: ४ :

अहंकार और उसका निवारण

इस तरह भगवान् विट्ठल नामदेव की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते। वह नामदेव के हाथों से नैवेद्य खाते और उनके साथ बातचीत भी करते। दूसरे-दूसरे सन्त आ जाते तो भगवान् उनकी तरफ न देखकर नामदेव से ही बातें करते रहते। सचमुच भगवान् का नामदेव से बहुत प्यार होगया था। नामदेव में इससे अहंकार पैदा होगया। वह समझने लगे कि मैं ही सबसे बड़ा सन्त हूं।

एक बार शक संवत् १२१३ में नामदेव महाराज आलंदी चले गये जहां संत ज्ञानेश्वर रहते थे। भगवान् का प्यारा भक्त घर आया देखकर ज्ञानेश्वर महाराज को बहुत आनंद हुआ और उन्होंने नामदेव के चरण छुए। उनके बड़े भाई और उनके गुरु श्री निवृत्तिनाथ

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ने भी नामदेव को प्रणाम किया। इससे नामदेव का अहंकार और बढ़ गया। उन्होंने सोचा, मैं इन लोगों से बड़ा हूं। मैं इनके चरण क्या छुऊंगा ? यह बात निवृत्तिनाथ और ज्ञानेश्वर के भी ध्यान में आई, मगर वे मुस्कराकर चुप रह गये। पर उनकी छोटी बहन मुक्ताबाई से नामदेव का यह घमंड बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने नामदेव को प्रणाम तो किया ही नहीं, बल्कि उलटे व्यंग्य से बोलीं।

अखंड जयाला देवाचा शेजार।
काय अहंकार गेला नाहीं ?

—जिसके भाग्य में आठों पहर भगवान् का पड़ौस या सान्निध्य हो उसका यह अहंकार कैसे बना रहा ?

और उन्होंने नामदेव को काफी उपदेश सुनाया। इतने पर भी नामदेव का घमंड कम नहीं हुआ तो मुक्ताबाई ने और एक तरकीब निकाली।

एक दिन सारे संत गोरा कुम्हार के यहां जमा होगये थे। गोरा उम्र में सबसे बड़े थे। इसलिए सब लोग उन्हें 'चाचा' कहते। मुक्ताबाई उनसे भरी सभा में बोलीं, "चाचाजी, आप मटकों की जांच अच्छी तरह कर सकते हैं कि कौन-सा मटका कच्चा है और कौन-सा पक्का। हम लोग जो यहां जमा हुए हैं, उनकी भी परीक्षा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आप कर लें और यह बतायें कि कौन-सा मटका कच्चा है, कौन-सा पक्का ?"

गोराजी मुस्कराते हुए उठे और छोटा-सा डंडा हाथ में लेकर हर सन्त के सिर पर हल्की चोट लगाने लगे। सबने वह चोट चुपचाप सह ली, मगर जब नामदेव की बारी आई तो वह नाराज होकर बोले, "चाचाजी, यह क्या लड़कपन है ! घर आये हुए सन्तों के सिर पर डंडा मारना, यह कहां का रिवाज है ?"

"यह मिल गया कच्चा मटका।" गोराजी ने कहा।

इसपर सारे सन्त खिलखिलाकर हँस पड़े। नामदेव झेंप गये और वहां से उठकर सीधे भगवान् विट्ठल के पास पहुंचे। उन्होंने भगवान् को सारी घटना सुनाकर सब सन्तों के विरुद्ध शिकायत की।

इसपर भगवान् ने कहा, "बेटा नामदेव, उन लोगों ने जो कहा वह गलत नहीं है। तुममें कुछ कच्चापन जरूर है और जबतक तुम किसीको अपना गुरु नहीं बनाओगे तबतक यह कच्चापन नहीं जायगा। बिना गुरु के आदमी को पूरा ज्ञान नहीं मिल सकता।"

नामदेव को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह समझते थे कि गुरु की मदद से आखिर जिस भगवान् के दर्शन पाने होते हैं, वह दर्शन तो मुझे मिल ही चुके हैं। इतना

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ही नहीं, बल्कि भगवान् तो मेरे साथ बातचीत भी करते हैं। फिर मेरे लिए गुरु की क्या जरूरत है ?

"चाचाजी, यह क्या लड़कपन है ?"

मगर अब स्वयं भगवान् के मुंह से गुरु का महत्त्व सुनकर वह बहुत पछताये और उन्होंने भगवान् से पूछा, "मैं किसको अपना गुरु बनाऊं ?"

"आंवढया नागनाथ में रहनेवाले विसोबा खेचर को तुम अपना गुरु बनाओ।" विट्ठल भगवान् ने कहा।

इसके बाद नामदेव गुरुजी के दर्शन करने के लिए निकल पड़े।

नामदेव जब आंवढया गांव में पहुंचे तो उन्हें पता

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

चला कि विसोबा खेचर शिवजी के मन्दिर में हैं।

उन्होंने मन्दिर में जाकर देखा तो वहां एक बूढ़ा आदमी अपने जूते पहने हुए पांव शिवजी की पिंडी पर रखे आराम से सोया हुआ था। नामदेव ने सोचा, जिस आदमी में इतनी भी तमीज नहीं वह भला मेरे जैसे भक्त का क्या गुरु हो सकता है ?

मगर भगवान् विट्ठल की आज्ञा जो थी। इसलिए वह चुपचाप वहां खड़े रहे। उनकी आहट पाकर विसोबा जब जाग गये तो नामदेव ने उनसे कहा, "महाशय, आप अपने पैर भगवान् की मूर्ति पर से हटा लीजिये।"

इसपर विसोबा बोले, "देखो बेटा, मैं बहुत बूढ़ा होगया हूं। पांवों को हिलाने की भी ताकत मुझमें नहीं। बड़ी महरबानी होगी, अगर तुम मेरे पांवों को उठाकर ऐसी जगह पर रखो जहां शिवजी की पिंडी न हो।"

नामदेव ने झुककर उनके पांव पकड़े और उन्हें उठाकर दूसरी जगह रखा। मगर जैसे ही उन्होंने पैर नीचे रखे कि वहां पैरों के नीचे एक पिंडी तैयार हो गई। उन्होंने जल्दी से पैरों को उठाकर वहां से हटा-कर दूसरी जगह रखा कि वहां भी पिंडी दिखाई देने लगी। यह बात कई बार हुई, यहांतक कि वह मन्दिर पिंडियों से भर गया। अब नामदेव समझ गये कि

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इस संसार का चप्पा-चप्पा भगवान् से भरा हुआ है

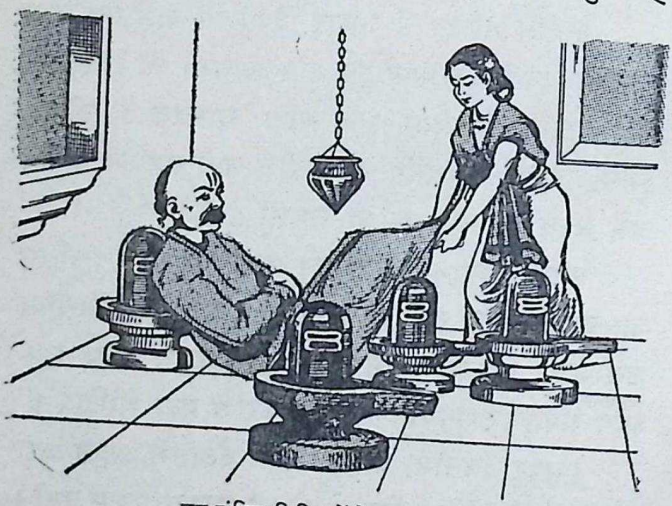

वह मंदिर पिण्डियों से भर गया।

और वह विसोबा की शरण गये।

विसोबा ने उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद और उपदेश दिया। गुरु की कृपा से नामदेव का कच्चापन दूर हो गया और वह पहुंचे हुए सन्त माने जाने लगे।

: ५ :

ज्ञानेश्वर के साथ तीर्थ-यात्रा

एक बार संत ज्ञानेश्वर महाराज की इच्छा हुई

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कि वह नामदेव के साथ चारों धामों की यात्रा कर आयें। उन्होंने यह सुझाव नामदेव के सामने रखा तो वह बोले, "मेरा सखा पांडुरंग ही मेरा सब-कुछ है। उसे पाने के बाद और क्या पाना बाकी रहता है? उसे छोड़कर मैं कहां मारा-मारा फिरूं? फिर भी आपका आग्रह ही हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, बशर्ते कि मेरा विट्ठल मुझे जाने की इजाजत दे दे।"

तब वे दोनों भगवान् विट्ठल के पास गये और ज्ञानेश्वर ने उनसे इजाजत चाही कि वह नामदेव को साथ लेकर उन्हें तीर्थ-यात्रा के लिए जाने दें। भगवान् ने कहा, "ज्ञानोबा, आपका विचार तो ठीक है; पर आप जानते ही हैं कि नामदेव से मुझे कितना प्रेम है। आप उसे जरूर साथ ले जाइये, मगर उसका अच्छी तरह ध्यान रखिये।"

भगवान् की इजाजत लेकर वे दोनों सारे देश में घूम आये। बीच-बीच में भगवान् विट्ठल की याद आने पर नामदेव बेचैन हो उठते थे। तब ज्ञानेश्वर उन्हें समझाते, "परमेश्वर तो हर जगह है। फिर आप उसे अपने साथ क्यों नहीं पाते? वह तो आपके हृदय में ही बसा हुआ है।"

इसपर नामदेव कहते, "आप तो योगी और ज्ञानी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हैं। आपको इस तरह के तर्क से सन्तोष मिलता है। पर मैं एक सीधा-सादा भक्त हूं। मेरा मन पांडुरंग को छोड़ और कहीं नहीं लगता।"

भारत के सारे मुख्य-मुख्य तीर्थ-स्थानों की यात्रा करते हुए जब वे आंवढया नागनाथ पहुंचे तब वहां के लोगों ने उनसे आग्रह किया कि वह शिवजी के मन्दिर में कथा-कीर्तन करें। नामदेव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह कीर्तन करने लगे। उस मंदिर के पुजारी ब्राह्मण थे। उन्हें यह बात खटकी कि एक अब्राह्मण आकर वहां कीर्तन करे। इसलिए वे मन्दिर में गये और नामदेव से बोले, "यह क्या शोर मचा रखा है! यह शिवजी का मन्दिर है, पंढरपुर का विट्ठल-मन्दिर नहीं है। यहां विष्णु का गुणगान नहीं किया जा सकता। तुम लोग निकल जाओ यहां से!"

इसपर नामदेव ने श्रोताओं से कहा, "भाइयो, चलिये, हम लोग मन्दिर के पिछवाड़े जाकर भगवान् का भजन करें।" और वह पीछे की ओर चले गये।

इतने में एक चमत्कार हुआ। सारा मन्दिर घूम गया और उसका दरवाजा पूरब से पश्चिम की तरफ होगया, मानो स्वयं शिवजी नामदेव का कीर्तन सुनना चाहते थे। यह चमत्कार देखकर ब्राह्मण देवताओं की

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आंखें खुल गईं और उन्होंने नामदेव से माफी मांगी। इस घटना को एक कवि ने लिखा है—

नामदेवा सी म्हणती ब्राह्मण ।
जात तुझी ओंगल ॥
चल बाहेर करिसी विटंल ।
तंव तो गेला देउला मागे ॥
के ले दगड़ाचे टाल ।
हरी नें फिरविलें देऊल ॥

—ब्राह्मणों ने नामदेव से कहा कि तेरी जात खराब है, तू यहां से निकल जा। तब वह मन्दिर के पिछवाड़े चला गया और उसने पत्थर के करताल बनाये। इतने में हरि ने मन्दिर को घुमा दिया।

: ६ :

समाधि

शक-संवत् १२१८ के कार्तिक बदी १३ को, यानी २५ अक्तूबर सन् १२९६ ईसवी को संत ज्ञानेश्वर महाराज ने समाधि ले ली, उस समय नामदेव अपने चारों बेटों के साथ वहां मौजूद थे। उनके बेटों ने समाधि का स्थान साफ करने आदि का काम किया। ज्ञानदेव के चले जाने से नामदेव को बड़ा दुःख हुआ। उसके बाद ज्ञानदेव के बड़े भाई सोपानदेव, निवृत्तिनाथ

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

और बहन मुक्ताबाई ने भी समाधि ली। उन सब अवसरों पर नामदेव मौजूद थे।

ज्ञानदेव के स्वर्गवास के बाद नामदेव पंजाब चले गये जहां वह लगभग बीस बरस तक भगवद्-भक्ति का प्रचार करते रहे। आज भी पंजाब में नामदेव के भक्त हैं और जिला गुरुदासपुर के घोमान गांव में 'गुरुद्वारा बाबा नामदेवजी' के नाम से नामदेव का एक मन्दिर भी है। कहते हैं, पंजाब के बहुत से हिन्दू दर्जी, रंगरेज और छीपी नामदेव-सम्प्रदाय के हैं।

इस प्रकार महाराष्ट्र और पंजाब को भक्ति के धागे से जोड़ने के बाद नामदेव पंढरपुर लौटे और वहीं पर विट्ठल-मन्दिर की सीढ़ियों के पास शक-संवत् १२७२ (सन् १३५० ईसवी) के आषाढ़ बदी १३ को ८० बरस की उम्र में समाधि ले ली। अपनी इतनी लम्बी आयु का पूरा-पूरा उपयोग करके नामदेव ने दूसरों के लिए एक नमूना उपस्थित कर दिया।

: ७ :

नामदेव के अभंग

नामदेव के अभंगों के बारे में भक्तों में यह धारणा है कि उन्होंने सौ करोड़ अभंग (दोहे या पद)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लिखने की प्रतिज्ञा की थी और उसे बहुत-कुछ पूरा भी किया था। परन्तु आज उनके केवल २५०० अभंग मिलते हैं, जिनमें ५००-६०० अभंग ही स्वयं उनके होंगे। नामदेव के घर की दासी जनाबाई भी पहुंची हुई सन्त मानी जाती हैं। उनके अभंगों को भी हमेशा नामदेव के संग्रह में ही दिया जाता है। जनाबाई की वाणी बहुत ही मीठी और घरेलू है। उनका एक अभंग हमने अन्त में दिया है। नीचे हम सन्त नामदेव महाराज के कुछ हिन्दी-पद और मराठी-अभंग नमूने के तौर पर दे रहे हैं। इन्हें पढ़ते समय पाठकों को हिन्दी के भक्त-कवि सूरदास का स्मरण बार-बार आये बिना नहीं रहेगा। एक तरह से हम कह सकते हैं कि सन्त नामदेव भी महाराष्ट्र के सूरदास ही थे। वही भोलापन, वही बालकृष्ण की प्रीति, वही भक्ति की मस्ती उनमें भी पाई जाती है।

मन मेरे गज जिह्वा मेरी काती[1]।
माप माप[2] काटऊं जमकी फांसी ॥१॥
कहा करऊं जाती कहा करऊं पाती।
राम को नाम जपऊं दिनराती ॥२॥
रांगनि रागऊं सीवनि सीवऊं।
रामनाम बिनु घरीय न जीवऊं ॥३॥

---

[1] कैंची [2] नाप-नाप कर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सोने की सुई रूपे का धागा ।
नामा का चित्त हरिसूं लागा ।।४।।

सुफल जन्म मोको गुरु कीन्हा ।
दुख बिसार सुखअन्तर दीन्हा।।१।।
ग्यान जान मोको गुरु दीन्हा ।
रामनाम बिन जीवन मन-हीना।।२।।
नामदेव स्मरण कर जाना ।
जगजीवन से जीव समाना ।।३।।

मन पंछीया मत पड़ पिंजरे,
संसार मायाजाल रे ।।१।।
तन जोबन रूप कारण,
न कर गर्व गंवार रे ।।२।।
एक दिनमो तिन बिरिया,
सदा झमकत काल रे ।।३।।
कुंभ काचा नीर भरिया,
बिनसत नाहीं बार रे ।।४।।
कहत नामदेव सुन भाई साधो,
साधु संगत धरना रे ।।५।।

माय न होती बाप न होता,
कर्म न होती काया ।
हम नहीं होते, तुम नहीं होते,
कौन कहां से आया ? ।।१।।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

राम कोई ना किसई केरा
जैसे तरुवर पंख बसेरा।
चंद्र न होता सुरज न होता
पानी पवन मिलायां ॥२॥
शास्त्र न होता वेद न होता
कर्म कहां से आया ?
खेचर भूचर तुलसी माला
गुरु - प्रसादी पाया।
नामा परणवे परम तप्त है
सदगुरु होइ लखाया ॥३॥

काहे रे मन बिखया बन जाय।
भूलो रे ठग मूरी खाय ॥१॥
जैसे मीन पानी में रहे।
काल-जाल की सुध नहीं लहे ॥२॥
जूं मधमाखी संचै अपार।
मध लीनो मुख दीनी छार ॥३॥
गऊ बाछ को संचै खीर।
गला बांधकर दोह लेत अहीर ॥४॥
अति संचय समझे नहीं मूढ़।
तन धरती धन हो गयो दूर ॥५॥
काम क्रोध तृष्णा अति जरे।
साधु संग कबहू नहीं करे ॥६॥
कहत नामदेव उसकी आन।
निरभय होये भजे भगवान ॥७॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तू माझी माउली मी वो तुझा तान्हा ।
पाजी प्रेम पान्हा पांडुरंगे ॥१॥
तू माझी गाउली मी तुझें वासरूं ।
न को पान्हा चोरूं पांडुरंगे ॥२॥
तूं माझी हरिणी मी तुझें पाडस ।
तोडी भवपाश पांडुरंगे ॥३॥
तूं माझी पक्षिणी मी तुझें अंडज ।
चारा घालीं मज पांडुरंगे ॥४॥
नामा म्हणे होशी भक्तीचा वल्लभ ।
मागें पुढें उभा सांभाळशी ॥५॥

—हे पांडुरंग ! तू मेरी मां है और मैं तेरा बच्चा हूं । तू मुझे अपने प्रेम का दूध दिल खोलकर पिला दे । तू मेरी गाय है और मैं तेरा बछड़ा हूं, तू अपना दूध मुझसे छिपाकर मत रख । तू मेरी हिरनी है और मैं तेरा हरनौटा हूं । तू मेरे भवपाशों को तोड़ दे । तू मेरी पक्षिणी है और मैं तेरा चकुवा हूं । अपनी चोंच से तू मुझे दाना खिला दे । नामदेव कहते हैं कि ऐ भगवान्, तू भक्ति का स्वामी है और आगे-पीछे खड़ा रहकर मेरी रक्षा तू करता है ।

परब्रह्म निष्काम तो हा गौलिया घरीं ।
वाकी वाळे अंदुकृष्ण नवनीत चोरी ॥१॥
म्हणती गौळणी हरिचीं पाउलें धरा ।
रांगत रांगत ये तो हरि हा राजमंदिरा ॥२॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लपत छपत ये तो हरि हा राजभुवनीं ।
नंदासि टाकुनि आपण बैसे सिंहासनी ॥३॥
सांपडला देव्हारीं यासी बांधा दाव्यांनीं ।
शंख चक्र गदा पद्म शारंगपाणी ॥४॥
बहुत कष्टें बहुत पुण्यें जोडलें देवा ।
राखा अंतरीं हरिसी न कळे याची माया ॥५॥
नामा म्हणे केशवा, अहो जी, तुम्हीं दाते व्हा ।
जन्मो जन्मीं द्यावी तुमची चरणसेवा ॥६॥

—परब्रह्म निष्काम श्रीकृष्ण ग्वालों के घरों में मक्खन की चोरी करता है। ग्वालिनें कहती हैं कि हरि के पैर पकड़ो। यह रेंगता हुआ राजमंदिर में पहुंच जाता है और नन्द को हटाकर स्वयं सिंहासन पर बैठ जाता है। अब यह देहरे में मिल गया है, इसे रस्सियों से बांध दो। यह शारंगपाणी शंख, चक्र, गदा, पद्म लिये हुए है। बहुत कष्टों और पुण्य के बल पर भगवान् की प्राप्ति हुई है। इसे हृदय में रखो। इसकी माया समझ में नहीं आती। नामदेव कहते हैं कि हे केशवजी, आप दाता बनें और प्रत्येक जन्म में अपनी चरण-सेवा का लाभ दे दें।

देह जावो अथवा राहो ।
पांडुरंगीं माझा भावो ॥१॥
चरण न सोडीं सर्वथा ।
आण तुझी पंढरि नाथा ॥२॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वदनीं तुझें मंगल नाम ।
हृदयीं अखंडित प्रेम ।।३।।
नामा म्हणे केशव-राजा ।
केला पण चालवीं मांझा ।।४।।

यह मेरी देह रहे या जाय, मेरी भक्ति तो पांडुरंग में कायम रहेगी। हे पंढरिनाथ, मैं तेरी कसम खाकर कहता हूं कि मैं तेरे चरण कभी नहीं छोड़ूंगा। मैं चाहता हूं कि मेरे मुंह में तेरा मंगल नाम सदा रहे और सबके लिए मेरा हृदय प्रेम से भरा रहे। नामदेव कहते हैं कि हे केशवराजा, मैंने जो यह प्रतिज्ञा की है उसे तू टूटने न दे।

येग येग विठाबाई । माझे पंढरीची आई ।।१।।
भीमा आणि चन्द्रभागा, तुझ्या चरणींच्या गंगा ।।२।।
इतुक्यां सहित त्वां बा यावें, माझ्या रंगणीं नाचावें ।।३।।
माझा रंग तुझे गुणीं, म्हणे नामयाची जनी ।।४।।

—ए मेरी पंढरपुर की मां विठाबाई, तू जल्दी आ जा। भीमा और चन्द्रभागा तो तेरे चरणों की गंगाएं हैं। उन्हें साथ लाकर तू आ और मेरी भजन-मंडली के साथ नाच। नामदेव की जनाबाई कहती है कि हे भगवान्, तेरे गुणों में मेरा रंग समाया हुआ है, मेरी लौ तुझसे लगी हुई है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. भगत की टेर
३. भीष्म पितामह
४. विधि और व्यवधि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. पीतम बुद्ध
१०. सांच सुखी, हक सुखी
११. निषाद और केवरी
१२. कितनी जमीन ?
१३ ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और मेमिनाथ
२०. तंदुरस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिवर की कंदराएं
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-गीती
२७. बापू की वाणी
२८. कबीर की बानी
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाबीप्रभु देवचंद्रजी
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थंकर प्रभाव
३७. देश की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गौ-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. शरत की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. वे थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कलों का विलय
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हाजी अब्दल रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. तिहत्तर-बत्तीसी : भाग १
६८. तिहत्तर-बत्तीसी : भाग २
६९. मेहसाणा का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरदास
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की महाप्रेमिका
७६. सोने का संसार
७७. झांसी की रानी
७८. हुमा सवेरा
७९. वीरवल की बातें
८०. मन के गीते बीत
८१. सुरभी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. ज्ञानवान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश माँ आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. सन्त ज्ञानेश्वर
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि दयानंद
१००. दानवीर कर्ण
१०१. वेश सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. अंकुरलाल
१०६. जमनालाल
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ने-लिखने
१०९. होशारी
११०. वसु बंधु

मूल्य : प्रत्येक का [illegible]

तेरीस नये पेर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar